

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 8, यिर्मयाह 2-3, विवाह रूपक, ईश्वर और इस्राएल

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने निर्देश में हैं। यह सत्र 8 है, यिर्मयाह 2-3, विवाह रूपक, ईश्वर और इस्राएल।

आज के पाठ में हमारा ध्यान यिर्मयाह अध्याय दो पर है, और हम ईश्वर की बेवफा पत्नी के बारे में यिर्मयाह के अभियोग के विषय पर विचार करने जा रहे हैं।

पिछली बार अध्याय एक के हमारे पाठ में, हमने देखा कि वहाँ का अंश सिर्फ यिर्मयाह का बुलावा और यिर्मयाह की सेवकाई की शुरुआत नहीं है। कई मायनों में, यह पूरी किताब का एक कार्यक्रमिक परिचय है। हमारे पास यिर्मयाह राष्ट्रों के लिए एक भविष्यवक्ता के रूप में है।

वह न्याय और उद्धार का संदेशवाहक है। वह तोड़ता है और बनाता है। वह परमेश्वर के वचन की जीवंत अभिव्यक्ति बन जाता है।

परमेश्वर ने उसके मुँह में अपने शब्द डाले हैं। उत्तर दिशा से एक शत्रु है, बेबीलोनियों का विषय है कि परमेश्वर उनके माध्यम से क्या कर रहा है। प्रभु यिर्मयाह को एक किलेबंद शहर में कांस्य की दीवारों की तरह बनाने जा रहा है क्योंकि उसके पूरे मंत्रालय में संघर्ष होने वाला है।

यिर्मयाह को उस शुरुआती अध्याय में मूसा की तरह एक भविष्यवक्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मूसा कहता है, हे प्रभु, किसी और को भेजो। मैं बोलना नहीं जानता।

यिर्मयाह कहता है, हे प्रभु परमेश्वर, आप मुझे भविष्यवक्ता बनने के लिए बुला रहे हैं। मैं तो एक बच्चा हूँ। मैं बोलना नहीं जानता।

तो, यिर्मयाह की पुस्तक में जो विषय स्वयं काम करने वाले हैं, वे अध्याय एक में पाए जाते हैं। एक अर्थ में, यिर्मयाह अध्याय दो, श्लोक एक से चार, हमें यिर्मयाह के वास्तविक संदेशों की पहली इकाई देते हैं। कई मायनों में, वे उन विषयों को पेश करने जा रहे हैं, जो, फिर से, मेरा मानना है, पूरी पुस्तक में स्वयं काम करते हैं।

यिर्मयाह अध्याय दो इसराइल के साथ भगवान के संबंधों के विखंडन पर नजर डालने वाला है। वह रिश्ता एक शादी की तरह है। अनुबंध एक विवाह की तरह है और वह रिश्ता टूट जाता है।

यिर्मयाह की पुस्तक के शेष भाग, और विशेष रूप से आशा का संदेश जो अध्याय 30 से 33 में है, हमारे लिए यह व्यक्त करने जा रहा है कि वह रिश्ता कैसे बहाल होने वाला है। कभी-कभी हमारे लिए यिर्मयाह की पुस्तक पढ़ना कठिन होता है। फिर, यह उन किताबों से भिन्न है जिन्हें हम पढ़ते थे।

यह उनके जैसा नहीं है जो हमारे किंडल में हैं। यहां तक कि नए नियम, पॉल के पत्र या सुसमाचार को पढ़ना भी कठिन है। लेकिन मैं इस अर्थ में विश्वास करता हूँ कि अगर हम यिर्मयाह की किताब को एक ऐसी कहानी के रूप में समझते हैं जो इन सभी संदेशों के साथ चलती है, तो इस कहानी में दो चीजें हैं जो खुद काम कर रही हैं।

नंबर एक, जैसा कि एंड्रयू शीड हमें याद दिलाते हैं, यिर्मयाह की किताब परमेश्वर के वचन की कहानी है। यह परमेश्वर के वचन की कहानी है और यह कैसे दिखता है और इसे कैसे प्रस्तुत किया जाता है और यिर्मयाह के जीवन और समय में इसका जवाब कैसे दिया जाता है। यह एक कहानी है कि परमेश्वर का वचन क्या पूरा करता है।

परमेश्वर का वचन शक्तिशाली है। परमेश्वर का वचन यहूदा जाति को उनकी अवज्ञा के कारण नष्ट कर देता है, परन्तु परमेश्वर का वचन उन्हें भविष्य के लिए आशा भी देता है। तो, यह कथानक का हिस्सा है।

परमेश्वर के वचन का क्या होता है? यह किस तरह का है? यह किस तरह का दिखता है? यह क्या पूरा करता है? लेकिन यिर्मयाह का एक और हिस्सा जहां हम पूरी किताब में लगभग एक कथानक की कल्पना कर सकते हैं, वह यह है कि यिर्मयाह की किताब यहूदा के बारे में भगवान की बेवफा पत्नी के रूप में है और अंततः, भगवान उस टूटे हुए रिश्ते को कैसे बहाल करने जा रहे हैं। अब, जैसा कि हम यिर्मयाह में अध्याय दो और अध्याय तीन को देखना शुरू करते हैं, यह मार्ग, कई भविष्यवक्ताओं की तरह और सामान्य रूप से पुराने नियम की कविता के रूप में सच है, इसमें कई बहुत शक्तिशाली रूपक और शब्द छवियां हैं। भविष्यवक्ता हमें केवल जानकारी देना नहीं चाहते।

भविष्यवक्ता चाहते हैं कि हम उस संदेश को महसूस करें जो वे हमें दे रहे हैं। वे चाहते हैं कि हम भावनाओं को पकड़ें। यह उन चीजों में से एक है जो मुझे यिर्मयाह के बारे में पसंद है और वह है उसका उपदेश देने का जुनून।

लेकिन हमें सिर्फ यह जानकारी नहीं मिलती कि बेबीलोनवासी आ रहे हैं और वे 586 में यहाँ होंगे। हमें यह आभास होता है कि बेबीलोनवासी आ रहे हैं, और वे एक प्राचीन राष्ट्र होंगे जिन्हें आप पहचान भी नहीं सकते। वे आपको मिटा देंगे।

वे टिड्डियों की तरह होंगे जो आपकी ज़मीन खा जाएंगे। वे शेर, भेड़िये और तेंदुओं की तरह होंगे। ये सभी छवियाँ हम पर टूटकर गिरती हैं।

अध्याय दो में, हमारे पास कई अलंकार और कई छवियाँ हैं जहाँ यिर्मयाह वास्तव में परमेश्वर के अभियोक्ता वकील के रूप में उनके खिलाफ़ परमेश्वर के अभियोग की घोषणा करने का काम कर रहा है। यहाँ आरोप है। यहाँ वे पाप हैं जो आपने किए हैं।

मैं बस कुछ मुख्य रूपकों पर चर्चा करना चाहता हूँ जो इस अध्याय को पढ़ते समय मेरे ध्यान में आए। लेकिन फिर एक केंद्रीय रूपक है जो मुझे लगता है कि इन सभी को एक साथ जोड़ता है।

अध्याय दो, श्लोक तीन में, प्रभु कहने जा रहे हैं कि इस्राएल एक राष्ट्र के रूप में फसल के पहले फल की तरह था।

तीसरी आयत में कहा गया है कि इस्राएल यहोवा के लिए पवित्र था, वह फसल का पहला फल था। जितने लोगों ने इसे खाया, वे सब पाप के भागी हुए। उन पर विपत्ति आई, यहोवा की यही वाणी है।

पुराने नियम के नियम के अनुसार, फसल का पहला फल प्रभु का होता है। वह परमेश्वर का भाग था। प्रभु इस्राएल के बारे में कहते हैं, वे मेरे भाग हैं।

वे मेरे चुने हुए लोग हैं। और इसके परिणामस्वरूप, यदि कोई उन्हें नुकसान पहुँचाने या उन्हें खाने या उनका उपभोग करने की कोशिश करता है, तो प्रभु ऐसा करने के लिए उन्हें नष्ट कर देगा। वे भगवान के हिस्से को छू रहे थे।

पुस्तक के बाकी हिस्सों में जो बात सामने आने वाली है, वह यह है कि प्रभु ने इन राष्ट्रों को आने और इस्राएल को तबाह करने की अनुमति दी है क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में अपनी स्थिति को दूषित कर दिया है। तो यह एक छवि है, जो शुरुआत में बहुत शक्तिशाली है। अध्याय दो, श्लोक तीन में, वे फसल के पहले फल हैं।

अध्याय दो, श्लोक 14 में, छवि यह है कि इस्राएल एक गुलाम बन गया है। अध्याय दो, श्लोक 14 में एक अलंकारिक प्रश्न है: क्या इस्राएल एक गुलाम है? क्या वह एक घरेलू नौकर है? वह इन अन्य राष्ट्रों का शिकार क्यों बन गया है? और इसलिए वहाँ छवि यह है कि इस्राएल एक गुलाम बन गया है। वे इन अन्य राष्ट्रों के बंधन में आ गए हैं।

यह वह स्थिति नहीं है जिसे परमेश्वर ने पहले से ही उनके लिए डिज़ाइन किया था। प्रभु ने उन्हें दासता से मुक्त किया था। और इसलिए, दुख की बात यह थी कि उनकी मूर्तिपूजा के द्वारा, इस्राएल खुद को फिर से दासता में डाल रहा था।

अध्याय दो, श्लोक 21 में, प्रभु इस्राएल की तुलना एक उत्तम बेल से करते हैं। और वहाँ लिखा है, मैंने तुम्हें वादा किए गए देश में लगाया है, प्रभु कह रहे हैं, एक उत्तम बेल की तरह जो शुद्ध बीज से पवित्र है। फिर, तुम कैसे पतित हो गए और एक जंगली बेल बन गए? तो, प्रभु ने शुरू में अपने लोगों को भूमि में लगाया।

वह चाहता था कि वे फलदायी हों। वह चाहता था कि वे अपने जीवन में फल लाएँ। इसके बजाय, वे ज़हरीले ओक या ज़हरीले आइवी की तरह जंगली बेल बन गए हैं।

और वे बेकार हैं। वे खरपतवार हैं जिन्हें काट दिया जाना चाहिए। और इस्राएल की छवि एक बेल के रूप में पुराने नियम में अन्य स्थानों पर इस्तेमाल की गई है।

भजन 80 में, प्रभु इस्राएल को एक ऐसी बेल के रूप में चित्रित करते हैं जिसे उन्होंने भूमि में लगाया था, लेकिन वह फिर से उनके प्रति विश्वासघाती हो जाती है। अध्याय पाँच में, यशायाह

इस्राएल को एक दाख की बारी के रूप में प्रस्तुत करता है। भविष्यवक्ता कहता है कि प्रभु अच्छे अंगूर चाहते थे, लेकिन इसके बजाय, उन्होंने जंगली और खट्टे अंगूर पैदा किए हैं।

एक तरह से, यहाँ वही छवि है। प्रभु ने इस्राएल को रोपा और यह सुनिश्चित करने के लिए वह सब कुछ किया जो वह कर सकता था ताकि वे एक उत्पादक लता बन सकें। इसके बजाय, वे एक जंगली और भ्रष्ट लता बन गए हैं।

अध्याय दो, श्लोक 22, और अध्याय दो, श्लोक 34 में यहूदा को एक अपराधी के रूप में चित्रित किया गया है जो खून के धब्बों से भरा हुआ है। इस प्रकार हम अध्याय दो, श्लोक 22 में पढ़ते हैं, यद्यपि तुम अपने आप को मैल से धोते हो और बहुत साबुन लगाते हो, तौभी तुम्हारे अपराध का दाग अब तक मेरे साम्हने है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। श्लोक 34, आपकी स्कर्ट पर भी, निर्दोष गरीबों का जीवन-रक्त पाया जाता है।

तू ने उन्हें घुसते हुए नहीं पाया, तौभी इन बातों के होते हुए भी तू कहता है, मैं निर्दोष हूँ। और इसलिए, उन्हें खून के धब्बे के रूप में चित्रित किया गया है। जांचकर्ता, रक्त की उपस्थिति दिखाने वाली बैंगनी रोशनी को चालू किए बिना, पूरे इज़राइल में रक्त देख सकते हैं।

यह हमें यशायाह के पहले अध्याय की आयत 10 से 15 में भविष्यवक्ता यशायाह की कही बात याद दिलाता है। यहूदा के लोग अपने हाथ परमेश्वर की ओर उठा रहे हैं और उससे विनती कर रहे हैं और उससे प्रार्थना कर रहे हैं। लेकिन जब वे परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे, तो प्रभु ने नीचे देखा और खून के धब्बे देखे।

अब, यिर्मयाह के श्रोताओं ने विरोध किया होगा कि हम हत्यारे नहीं हैं। हम उस अर्थ में अपराधी नहीं हैं। लेकिन वैसे, उन्होंने गरीबों के साथ जो व्यवहार किया था, जिस तरह से उन्होंने उन पर अत्याचार किया था, जिस तरह से उन्होंने उन्हें उनकी आजीविका से वंचित किया था, एक तरह से, भगवान की नज़र में, वे सभी, चाहे वे हिंसक अपराधी थे या नहीं, वे अपने पाप के अपराध से ढके हुए थे।

और यह एक बहुत ही शक्तिशाली छवि है। अध्याय दो, श्लोक 23, इस्राएल की परमेश्वर से दूर भटकने की प्रवृत्ति का वर्णन करता है। यह कहता है, तुम कैसे कह सकते हो कि मैं अशुद्ध नहीं हूँ? मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं गया हूँ।

घाटी में अपने रास्ते पर ध्यान दो और जान लो कि तुमने क्या किया है। तुम एक बेचैन युवा ऊँट हो जो इधर-उधर भाग रहा है। इसलिए, प्रभु उन पर मूर्तिपूजा का आरोप लगाते हैं।

वे कहते हैं कि हम बाल देवताओं के पीछे नहीं गए। हमने इन दूसरे देवताओं का पीछा नहीं किया। प्रभु कहते हैं, अपने आप को देखो।

तुम एक बेचैन युवा ऊँट की तरह हो, बस एक जानवर जो आगे-पीछे चलता रहता है। तुममें समझ की कमी है। तुमने जो कुछ किया है, उसने तुम्हें मूल रूप से एक जानवर से ज़्यादा कुछ नहीं बना दिया है।

आप वही हैं। अब, श्लोक 24 में छवि थोड़ी अधिक आक्रामक हो जाती है। यहाँ एक और रूपक है।

वह कहता है कि तुम एक जंगली गधे हो जो गर्मी में जंगल में हवा सूँघने की आदी हो। उसकी वासना को कौन रोक सकता है? तुम गर्मी में गधे की तरह हो। और जिस तरह से गर्मी में गधा अपने साथी की तलाश में पेशाब के निशान सूँघता है, उसी तरह तुम भी इन देवताओं के पीछे भागते हुए गर्मी में जंगली जानवर की तरह हो।

मेरा मतलब है, उनकी मूर्तिपूजा ने उन्हें उस स्तर तक गिरा दिया था। प्रभु चाहते थे कि वे इसे देखें। और इसलिए यिर्मयाह इस शक्तिशाली छवि का उपयोग करता है कि यह कैसा है।

अध्याय दो, श्लोक 26 में, वे एक चोर की तरह हैं जो काम करते हुए पकड़ा गया है। अध्याय दो, पद 26, जैसे चोर पकड़े जाने पर लज्जित होता है, वैसे ही इस्राएल का घराना भी लज्जित होगा। वे लूटने और चोरी करने के कार्य में ही पकड़े गये।

और फिर भी, इस पूरे अध्याय में, एक बात जो हम लोगों को कहते हुए देखेंगे वह यह है कि हम निर्दोष हैं। हमने इन अन्य देवताओं के द्वारा स्वयं को उस प्रकार अशुद्ध नहीं किया है जैसा आपने दावा किया है। और इसलिए ये रूपक, ये छवियाँ, वे हम पर टकराते हैं, और वे कई तरीकों से हम पर गिरते हैं, हमें इज़राइल के अपराध को देखने में मदद करने की कोशिश करते हैं।

जे. एंड्रयू डियरमैन, जैसा कि वे इस खंड का वर्णन करते हैं, कहते हैं कि यह संभवतः यिर्मयाह के संदेशों का संकलन है, जो उसने अपने मंत्रालय के लंबे समय के दौरान प्रचारित किए हैं। वे बाकी पुस्तक में जो हम देखते हैं उसके लिए मंच तैयार कर रहे हैं, क्योंकि यिर्मयाह उन पर वाचा के प्रति बेवफाई का आरोप लगाने जा रहा है। लेकिन भविष्यवक्ता केवल जानकारी ही नहीं देता है।

वह चाहता है कि लोग अपने पाप की दुष्टता को देखें। प्रभु उन्हें एक उत्तेजित पशु की तरह देखता है। प्रभु उन्हें एक गुलाम के रूप में चित्रित करता है।

वे स्वयं बंधन में हैं। प्रभु उन्हें भ्रष्ट बेल के रूप में देखता है जो वह फल नहीं दे रही जो उसे देना चाहिए। प्रभु उन्हें अपराधी के रूप में देखता है जिनके हाथों पर खून के धब्बे हैं या जो अपराध करते हुए पकड़े गए हैं।

और ये सभी छवियाँ लोगों को उनके पाप के बारे में समझाने के लिए हैं। लेकिन एकतापूर्ण रूपक और एकतापूर्ण छवि जो खुद को काम करती है, मेरा मानना है, अध्याय दो, श्लोक एक से अध्याय तीन में, यह है कि यहूदा एक बेवफा पत्नी है। और प्रभु के साथ अपनी वाचा में उनकी विफलता और उनके प्रति आज्ञाकारी होने में उनकी विफलता, और अधिक महत्वपूर्ण रूप से वफादारी के मुद्दे में, उनकी विशेष रूप से पूजा करने और उनकी सेवा करने में उनकी विफलता, वे एक बेवफा पत्नी की तरह बन गए हैं जिसने खुद को वेश्यावृत्ति में डाल दिया है और व्यभिचार किया है।

और इसलिए, हमारे पास यह विचार है जो पूरे पुराने नियम में दिखाई देता है कि मूर्तिपूजा केवल एक पाप नहीं है। मूर्तिपूजा आध्यात्मिक व्यभिचार का एक रूप है जहाँ इस्राएल के लोग अपने पति के रूप में परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती रहे हैं। अब, अध्याय दो और तीन में कई जगह हैं जहाँ हम इस विवाह संबंध के विशिष्ट संदर्भ देखते हैं।

अध्याय दो में, इस संदेश की शुरुआत में, भविष्यवक्ता कहने जा रहा है, प्रभु इस प्रकार कहते हैं, मुझे तुम्हारी युवावस्था की भक्ति याद है और कैसे तुमने मुझे दुल्हन की तरह प्यार किया और कैसे तुमने जंगल में मेरे पीछे-पीछे चली, एक ऐसे देश में जहाँ बोया नहीं गया था। तो, आइए हम परमेश्वर और इस्राएल के बीच विवाह संबंध के बारे में सोचें। जब प्रभु उन्हें मिस्र से बाहर लाए और जब वह उन्हें जंगल में ले जा रहे थे, तो भविष्यवक्ता कहते हैं कि यह विवाह में हनीमून का समय जैसा था।

आपने प्रभु का अनुसरण किया, आप उनके प्रति आज्ञाकारी थे, और हम पुराने नियम के अन्य हिस्सों के बारे में सोचना शुरू करते हैं, और उस पर हमारी प्रतिक्रिया हो सकती है, क्या आप मजाक कर रहे हैं? याद रखें कि भगवान और भगवान के बीच जंगल में क्या जीवन है? वे निर्गमन 32 में सोने के बछड़े की पूजा कर रहे हैं, इससे पहले कि भगवान और इज़राइल के बीच की वाचा का विवरण पहाड़ से नीचे लाया जाए। वे पुष्टि करते हैं, और वे प्रभु से कहते हैं कि वे निर्गमन 20 से 24 में उस वाचा के तहत रहेंगे, लेकिन हनीमून खत्म होने से पहले ही वे मूल रूप से भगवान को धोखा दे रहे हैं। और यह अनुच्छेद कहता है, ठीक है, वास्तव में, जब आप इसकी तुलना वर्तमान से करते हैं, तो जिस तरह से इज़राइल ने जंगल में भगवान को जवाब दिया, वह हनीमून की तरह था।

यह कुछ हद तक प्रतिबिंबित कर सकता है कि यिर्मयाह के मंत्रालय के दौरान वे कितने बेवफा हो गए हैं। वे कठोर गर्दन वाले, कठोर हृदय वाले, विद्रोही लोग थे। वे लगातार प्रभु की अवज्ञा करते हैं।

वे अपनी अवज्ञा के कारण 40 वर्षों तक जंगल में भटकते रहते हैं। फिर भी प्रभु कहते हैं कि मुझे तुम्हारी युवावस्था की भक्ति याद है। अब, भविष्यवक्ता यहजेकेल, अपनी पुस्तक के अध्याय 20 में, हमें इस्राएल के इतिहास का अधिक यथार्थवादी मूल्यांकन देने जा रहा है।

वह कहेगा, मूल रूप से तुमने अपने पूरे जीवनकाल में मूर्तियों की पूजा की है। तुम मिस्र में मूर्तियों की पूजा करते थे। तुम जंगल में भी मूर्तियों की पूजा करते हो, और मूल रूप से, यही उनका इतिहास है।

लेकिन यिर्मयाह 2 में, चित्र के हिस्से के रूप में, मुझे याद है कि एक समय पर, तुमने मुझसे उसी तरह प्यार किया था जैसे एक दुल्हन अपने पति से करती है। और मैं हमेशा पति और पत्नी की कहानी की कल्पना करता हूँ और वह पत्नी जो हमेशा कार में अपने पति के बगल में बैठती थी। वे दूर और अलग हो गए हैं, लेकिन पति उसे याद दिलाता है, देखो, मैं वह नहीं हूँ जो चला गया है, तुम चली गई हो।

और एक अर्थ में, यही बात प्रभु इस्राएल से कह रहे हैं। अब, ऐसे अन्य अंश और अन्य श्लोक हैं जो सीधे तौर पर परमेश्वर और इस्राएल को दुल्हन के रूप में दर्शाने वाले रूपक का उपयोग करने जा रहे हैं। और प्राथमिक बात जो ये श्लोक कहने जा रहे हैं वह यह है कि इस्राएल एक वेश्या बन गया है।

वे विश्वासघाती रहे हैं। उन्होंने व्यभिचार किया है। यह जरूरी नहीं कि यह संदेश दे कि उन्होंने सेक्स के लिए खुद को बेच दिया है, लेकिन यह ईश्वर के प्रति आध्यात्मिक विश्वासघात का विचार देता है।

श्लोक 20, फिर भी हर पहाड़ी पर और हर हरे पेड़ के नीचे, तुम एक वेश्या की तरह झुकी हुई हो। श्लोक 33 में यह कहा गया है, कल्पना को थोड़ा और आगे बढ़ाते हुए, तुम प्रेम की तलाश में अपने मार्ग को कितनी अच्छी तरह से निर्देशित करती हो, यहाँ तक कि दुष्ट महिलाओं को भी तुमने अपने तरीके सिखाए हैं। ठीक है, तुम सिर्फ एक वेश्या नहीं हो।

आप सिर्फ प्रभु के प्रति विश्वासघाती नहीं हैं। आप वास्तव में इस पर कक्षाएं दे सकते हैं क्योंकि आप वास्तव में इसमें अच्छे हैं। अध्याय 3, श्लोक 2, प्रभु कहने जा रहे हैं, या अध्याय 3, श्लोक 1, तू ने बहुत से प्रेमियों के साथ व्यभिचार किया है, और क्या तू फिर मेरी ओर फिरेगी, यहोवा की यही वाणी है? इज़राइल सिर्फ बेवफाई का दोषी नहीं था, और वे सिलसिलेवार बेवफाई के दोषी थे।

अध्याय 3, श्लोक 6 से 10, इस्राएल और यहूदा बेवफा बहनें हैं। और यहोवा ने पहले ही इस्राएल के लिये तलाक का प्रमाणपत्र लिख दिया है। और एक अर्थ में, क्योंकि यहूदा ने इस्राएल के साथ परमेश्वर ने जो किया उसका सबक नहीं सीखा है, यहूदा धर्मत्यागी उत्तरी राज्य से भी बदतर है।

अध्याय 3, श्लोक 19 से 21, यहूदा विश्वासघाती बेटे और विश्वासघाती पत्नियाँ बन गए हैं। और इसलिए, दोनों छवियाँ, निकटतम संभव पारिवारिक संबंध, पति और पत्नी का संबंध, पिता और उसके बच्चों का संबंध, कभी-कभी यह हमारे लिए अजीब लगता है कि पुराना नियम उन दो चीजों को एक साथ कैसे जोड़ता है, लेकिन यह इस बात पर जोर देता है कि प्रभु का अपने लोगों के साथ सबसे करीबी संभव संबंध है, और वे उस संबंध के प्रति वफादार नहीं रहे हैं। अब, जब हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को देखते हैं, तो इस्राएल के विश्वासघाती पत्नी के रूप में यह विचार केवल यिर्मयाह की पुस्तक में ही नहीं मिलता है।

यह पुराने नियम के दो अन्य भविष्यवक्ताओं के संदेश का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह भविष्यवक्ता होशे की कहानी, संदेश और उपदेश में बहुत महत्वपूर्ण है। होशे का अपना जीवन परमेश्वर के साथ इस्राएल के इतिहास का प्रतिनिधित्व और चित्रण करता है।

वह गोमेर नाम की एक बेवफा पत्नी से शादी करता है। चाहे वह शादी से पहले या शादी के बाद उसके साथ बेवफा हो, इस पर विद्वान विवाद करते हैं, लेकिन अंततः, वह रिश्ता टूट जाता है। उस विवाह से जो बच्चे पैदा होते हैं, वे ईश्वर के साथ संबंध विच्छेद को दर्शाते हैं, जो नाम उन्हें दिए गए हैं, मेरे लोगों को नहीं, मैं उन पर दया नहीं करूंगा।

लेकिन होशे अंततः अपनी पत्नी से प्यार करता है, उसे वापस लेता है और रिश्ते को बहाल करता है। यह इज़राइल और ईश्वर की कहानी है। यहजेकेल अध्याय 16 और यहजेकेल अध्याय 23 भी भगवान की दुल्हन के रूप में यरूशलेम और यहूदा और इज़राइल की बहुत शक्तिशाली छवियों का उपयोग करने जा रहे हैं।

आखिरकार, वे उसके खिलाफ कैसे अनैतिक और बेवफा रहे हैं, फिर से, आध्यात्मिक तरीके से मूर्तियों की पूजा करके, कभी-कभी यिर्मयाह जिस चौकाने वाले रूपकों और भाषा का उपयोग करता है, आप गर्मी में एक जानवर की तरह हैं। अध्याय दो, श्लोक 33 में, सबसे बुरी महिलाएं भी आपके तरीकों से सीख सकती हैं।

भविष्यवक्ता ईजेकील ऐसी कल्पना का उपयोग करता है जो उतनी ही ग्राफिक और उतनी ही ज्वलंत है। वह उन लोगों से कहते हैं जो निर्वासन में रह रहे थे, मूल रूप से इस्राएल के लोग, वे उस बच्चे की तरह थे जिसे एक खेत में छोड़ दिया गया था। गर्भनाल नहीं काटा गया था।

बच्चा जन्म से ही उसके खून से लथपथ था। इसे इसके माता-पिता ने त्याग दिया था। भगवान ने इस बच्ची को पाया और उससे प्यार किया और उसका पालन-पोषण किया, उसे हर संभव उपहार दिया।

फिर उसने उसे अपनी दुल्हन बना लिया। फिर, उन सभी चीजों के बाद जो उसने उस पर लुटाई थीं, उन सभी तरीकों के बाद जिनसे उसने अपने वैभव में उन्हें सुंदर बनाया था, यह महिला उसके खिलाफ हो गई और अपनी सुंदरता का इस्तेमाल किया और उन सभी चीजों का इस्तेमाल किया जो उसके पति ने उसे दी थीं, यहोवा ने इस्राएल को विश्वासघाती होने की आज्ञा दी थी। वह हर तरह से व्यभिचारी हो गई, हर सड़क के कोने पर, हर ऊंचे स्थान पर जिसका उसने खुद विज्ञापन किया।

यहजेकेल कहता है कि मेरे लोगों और वेश्या के बीच अंतर यह है कि वेश्या को उसकी सेवाओं के लिए भुगतान किया जाता है। मेरे लोगों ने वास्तव में उन प्रेमियों को भुगतान किया है जिनका उन्होंने पीछा किया है। व्यापार के सामान्य क्रम में, ऐसे लोग होते हैं जो वेश्या की तलाश करते हैं।

इस्राएल ने वेश्या के रूप में अपने प्रेमियों की तलाश की। भविष्यवक्ता यहजेकेल इस्राएल या सामरिया, यरूशलेम और सदोम की तुलना तीन बहनों के रूप में करने जा रहा है जो व्यभिचारी और विश्वासघाती थीं। वह कहने जा रहा है कि यहूदा बदतर है, यरूशलेम अपनी किसी भी बहन से बदतर है।

तो यिर्मयाह में दिखाई देने वाली इसी तरह की ग्राफिक कल्पना, होशे की कहानी का दिल है। यह यहजेकेल के उपदेश का हिस्सा है। अध्याय दो में, मुझे लगता है कि हमारे लिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि यिर्मयाह की पुस्तक में विवाह रूपक का वास्तव में उद्देश्य क्या है।

यह क्या संदेश देता है और हम इस छवि से क्या सीख सकते हैं? यिर्मयाह की पुस्तक में यह आधारभूत संदेश है। यह पहली बात है जिसे हम पढ़ने जा रहे हैं जो भविष्यवक्ता कहता है। तो यहाँ कुछ बातें हैं जो मुझे लगता है कि विवाह रूपक संदेश देता है।

नंबर एक, विवाह का रूपक इस्राएल के लिए परमेश्वर के प्रेम की गहराई पर जोर देता है। यिर्मयाह अध्याय 31 पद दो, मैंने तुझ से सदा प्रेम किया है। यिर्मयाह की पुस्तक में मेरी पसंदीदा आयतों में से एक।

खैर, हम उस शाश्वत प्रेम की गहराई को इस तथ्य में देखते हैं कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों के लिए अपने प्रेम के बारे में बात करने के लिए सबसे करीबी संभव मानवीय संबंध, स्वयं विवाह, एक पुरुष और एक महिला के बीच के संबंध का उपयोग करता है। नए नियम में, परमेश्वर हमारे लिए अपने प्रेम को कैसे चित्रित करता है? मसीह, हमारे पति के रूप में, हमारे दूल्हे के रूप में, अपनी दुल्हन के लिए खुद को दे दिया। इफिसियों के अध्याय पाँच में हमें जो आज्ञा दी गई है, पतियों अपनी पत्नियों से वैसे ही प्रेम करो जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया।

धर्मग्रंथ में भगवान और उनके लोगों के बीच विवाह का रूपक हमारे लिए भगवान के प्रेम की गहराई और डिग्री को व्यक्त करता है। जब भी मैं कोई विवाह समारोह करता हूँ, समारोह के हिस्से के रूप में जो अंश मैं पढ़ना पसंद करता हूँ उनमें से एक अंश सोलोमन गीत अध्याय आठ श्लोक सात में पाया जाता है। और मुझे लगता है कि हमें एहसास है कि सॉंग ऑफ सोलोमन में प्यार और शादी और इन सब की सुंदरता के बारे में कहने के लिए कुछ बातें हैं।

लेकिन श्रेष्ठगीत के अध्याय आठ, पद सात में वैवाहिक प्रेम के बारे में एक अभिव्यक्ति है। यह यह कहता है: बहुत से जल प्रेम को नहीं बुझा सकते। न ही बाढ़ इसे डुबा सकती है।

यदि कोई व्यक्ति प्रेम के लिए अपने घर की सारी संपत्ति अर्पित कर दे, तो इसके लिए वह पूरी तरह से तुच्छ समझा जाएगा। और मैं जोड़ों से कहता हूँ, जैसे ही मैं शादी करता हूँ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने घर में और अपने जीवन में उस तरह का प्यार जानें। यह आपके लिए किसी भी धन, किसी भी संपत्ति से अधिक मूल्यवान है।

इस तरह के प्यार को कोई भी खत्म नहीं कर सकता। यही असली वैवाहिक प्यार है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि एक जोड़े के रूप में, वे इसका अनुभव करेंगे।

लेकिन अगर वैवाहिक प्रेम ऐसा ही है, और बाइबल परमेश्वर के अपने लोगों या मसीह से विवाहित होने के रूपक का उपयोग कर रही है, तो हम उसकी दुल्हन हैं। और वह क्रूस पर मर गया ताकि वह हमें धो सके, हमें शुद्ध कर सके, और हमें पवित्र कर सके। यह परमेश्वर के प्रेम की गहराई के बारे में बहुत शक्तिशाली तरीके से बोल रहा है।

दूसरी बात जो हमें याद दिलाती है वह यह है कि इस्राएल में वाचा में विवाह का रूपक हमें वाचा के रिश्ते की विशिष्टता की याद दिलाता है। परमेश्वर इस्राएल से अपेक्षा करता है कि वह पूरी तरह से उसके प्रति समर्पित रहे। व्यवस्थाविवरण अध्याय छह, आयत चार और पाँच।

इस्राएल के लोगों के सामने प्रभु ने कौन सा वाचा मानक रखा है? आपको अपने पूरे दिल, पूरे दिमाग और पूरी ताकत से प्रभु से प्रेम करना है। आपके अस्तित्व का हर एक हिस्सा सिर्फ

परमेश्वर के प्रति समर्पित होना चाहिए। इससे किसी और चीज़ या किसी और व्यक्ति के उस रिश्ते में आने की संभावना नहीं रह जाती।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 13. मेरे सिवा तुम्हें कोई दूसरा ईश्वर नहीं मानना चाहिए। ऐसा कुछ भी नहीं है जो परमेश्वर के साथ प्रतिद्वन्द्वी के रूप में प्रतिस्पर्धा कर सके।

और इसलिए, पूरा विवाह रूपक रिश्ते की विशिष्टता पर जोर दे रहा है। कभी-कभी मैं अपने छात्रों से सोचने के लिए कहता हूँ, उनसे इस बारे में सोचने के लिए कहता हूँ। क्या आप कभी अपने सबसे अच्छे दोस्त को हनीमून पर ले जाने के बारे में सोचेंगे? यह आम तौर पर स्वीकार नहीं किया जाता है क्योंकि यह वह समय होता है जब आप पूरी तरह से समर्पित होते हैं, अपने पति, अपनी दुल्हन के लिए समर्पित होते हैं, और उस नए रिश्ते का आनंद लेते हैं जिसमें आपने प्रवेश किया है।

इस्राएल के साथ परमेश्वर का जो रिश्ता था, उसमें उन्हें विशेष रूप से उसके प्रति समर्पित होना था। और जो हम पुराने नियम में लगातार घटित होते देखते हैं, इस्राएली, मूर्तियों की पूजा करके, आम तौर पर प्रभु के साथ अपने रिश्ते को खत्म नहीं कर रहे हैं। समन्वयवादी तरीके से, वे इन अन्य देवताओं को अंदर लाने की कोशिश कर रहे हैं।

अरे, आइए यह सुनिश्चित करें कि हम अपने सभी आधारों से आच्छादित हैं। परमेश्वर कह रहा है कि वह चाहता है कि उसके लोग विशेष रूप से उसके प्रति समर्पित रहें। अब, भले ही पुराने नियम में बहुविवाह एक वास्तविकता थी, यह उस संस्कृति में कुछ ऐसा था जिसे भगवान सहन करते हैं और मोज़ेक कानून में इसे नियंत्रित करते हैं। हमें याद है कि उत्पत्ति अध्याय 2 में वापस जाने पर, विवाह के लिए भगवान की मूल योजना यह है कि एक पुरुष और एक महिला एक शरीर के रूप में एक साथ जुड़े रहेंगे, और यह रिश्ता उनके पूरे जीवन के लिए मौजूद रहेगा।

मानवीय स्तर पर विवाह के लिए भगवान की यही योजना है। आध्यात्मिक स्तर पर, भगवान की योजना यह है कि जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जो कभी भी भगवान की जगह ले सके। हमारे जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है, चाहे वह कोई ऐसी चीज़ हो जिसे हम समर्पित करते हैं, या जिस पर हम भरोसा करते हैं, या जिससे हम प्यार करते हैं, या जिसकी हम सेवा करते हैं, जो कभी भी उससे प्रतिस्पर्धा या प्रतिद्वंद्वी बन सके।

मूर्तिपूजा का पाप, वाचा की अवज्ञा के सभी पाप जो इस्राएल परमेश्वर को अर्पित कर सकता था, मूर्तिपूजा का पाप, मुझे लगता है, सबसे गंभीर था, क्योंकि यह वफ़ादारी और बेवफ़ाई का पाप था जिसने इन अन्य पापों को जन्म दिया। तो, नंबर एक, विवाह रूपक परमेश्वर के प्रेम की गहराई पर जोर देता है। नंबर दो, रिश्ते की विशिष्टता।

नंबर तीन, प्राचीन निकट पूर्व के संदर्भ में, विवाह रूपक अपने पति के रूप में भगवान पर इज़राइल की निर्भरता को दर्शाता है। अब, हमारी संस्कृति में विवाह बनाम पुराने नियम के दिनों में विवाह काफी भिन्न है। और भी बहुत कुछ है, एक समतावादी प्रकार का रिश्ता है जिसे हम पति और पत्नी के रूप में दर्ज करते हैं।

लेकिन प्राचीन निकट पूर्व की संस्कृति में, पत्नी, लगभग हर तरह से, पति पर निर्भर थी। वह उसकी आजीविका थी। वह उसका जीवन था।

पुराने नियम की संस्कृति में बड़े पैमाने पर, पति के पास उस विवाह में अधिकार और विशेषाधिकार थे जो जरूरी नहीं कि पत्नी के लिए भी सच हों। अब, विवाह के उस विशेष पहलू को आवश्यक रूप से बाइबल द्वारा समर्थित नहीं किया गया है, लेकिन चूंकि भविष्यवक्ताओं ने इज़राइल के पति के रूप में ईश्वर के इस रूपक का उपयोग किया है, यह उस विशेष संस्कृति में एक अनुस्मारक है कि यहां कुछ अर्थों में एक असमान संबंध है। इज़राइल ईश्वर पर निर्भर है, और उन्हें उसकी उसी तरह आवश्यकता है जैसे प्राचीन निकट पूर्व के संदर्भ में एक पत्नी को अपने पति की आवश्यकता होती है।

नंबर चार, विवाह का रूपक हमारे लिए तनाव पैदा करने वाला है, मुझे लगता है, इज़राइल के पाप की गंभीरता और शर्मनाकता। और यह इस ग्राफ़िक इमेजरी का हिस्सा है। भविष्यवक्ता उन पर गर्मी में जानवर की तरह होने का आरोप क्यों लगाएगा? भविष्यवक्ता ने ये चौंकाने वाली बातें क्यों कही होंगी? तुमने नगर के हर वृक्ष के नीचे या हर ऊंचे स्थान पर अपने पैर फैलाये हैं।

मैं कल्पना कर सकता हूं कि अगर हम एक पादरी के रूप में किसी चर्च में जाते और आज चर्च में इस तरह के बयान देते, तो इसका वास्तव में अच्छा स्वागत नहीं होता। तो, वे क्या करने की कोशिश कर रहे थे? वे इन लोगों को उनके पाप की गंभीरता को समझने में मदद करने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने इस विशेष, पवित्र रिश्ते का उल्लंघन किया है।'

और आश्चर्यजनक बात यह है कि ईश्वर को केवल उस पर क्रोध महसूस होने के बजाय, जो जाहिर तौर पर वह करता है, ईश्वर को उस पति का दुःख भी महसूस होता है जिसे उसके साथी ने धोखा दिया है। और मैं एक पादरी के रूप में जानता हूं, सबसे दर्दनाक क्षण जो मैंने लोगों के साथ बिताए हैं वे ऐसे समय थे जब किसी ने वैवाहिक रिश्ते में, चाहे वह पति हो या पत्नी, उन्होंने उस विश्वास को तोड़ा है, चाहे परिस्थितियां कैसी भी हों या कितनी भी बड़ी क्यों न हों। एक-दूसरे से प्यार करते हैं या उस रिश्ते को दोबारा स्थापित करना चाहते हैं, उस चीज़ में दर्द होता है जो जीवन में किसी अन्य अनुभव जैसा नहीं होता। और इसलिए, एक वेश्या के रूप में इज़राइल का विचार बताता है कि पाप सिर्फ भगवान के कानून को तोड़ना नहीं है।

एक अर्थ में, पाप परमेश्वर का हृदय तोड़ रहा है। और प्रभु इस दर्द और दुःख को महसूस करता है कि उसकी पत्नी ने उसके साथ क्या किया है, उसके साथी ने उसके साथ क्या किया है। होशे 2, श्लोक 5-7, और मैंने इसे पढ़ा, आप जानते हैं, ईश्वर और इज़राइल, लेकिन मैं एक पति के रूप में सोचता हूं कि जब मैं इस अनुच्छेद को पढ़ता हूं तो मुझे कैसा महसूस होता है।

होशे का कहना है कि इस्राएल को वे अच्छे उपहार मिले जो प्रभु ने उन्हें दिए थे: भूमि, शराब, अनाज, वे सभी आशीर्वाद। और अंततः उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्होंने उन उपहारों का श्रेय ईश्वर को नहीं बल्कि बाल को दिया। और उन्होंने बाल को अपना प्रेम और भक्ति दी, और कहा, देखो बाल ने हमारे पति होकर हमें कैसी आशीष दी है।

अब, एक पति के रूप में, यह वैसा ही है जैसे कि मैं अपनी पत्नी को रात के खाने के लिए बाहर ले जाता हूँ और उसके लिए गुलाब खरीदता हूँ, और वह हमारे पड़ोसी को इसके लिए धन्यवाद देने के लिए रात के खाने के लिए आमंत्रित करती है, यह बिल्कुल वही है जो इज़राइल के लोगों ने प्रभु के साथ किया था। और मुझे लगता है कि हर पति जो उस श्रोता में था और उसने उस संदेश को सुना, वह दर्द महसूस करेगा जो प्रभु ने महसूस किया था। सम्मान और शर्म की संस्कृति में, महिलाओं को उस शर्म का एहसास होता होगा जिसे वेश्या के लेबल के लिए जिम्मेदार ठहराया गया होगा।

और यह सिर्फ़ कुछ ऐसा नहीं था जो परमेश्वर उस संस्कृति में महिलाओं के बारे में कह रहा था; यह कुछ ऐसा था जो सभी लोगों को खुद को उस स्थिति में रखना था। हर पति के रूप में, याद रखें, वे ही हैं जिनसे मुख्य रूप से पैगंबर बात कर रहे हैं क्योंकि वे ही ऐसे निर्णय लेंगे जो राष्ट्र की दिशा तय करेंगे। उस समाज में हर पति को न केवल खुद को परमेश्वर के स्थान पर रखना चाहिए बल्कि खुद को उस कामुक महिला के स्थान पर रखना चाहिए जो प्रभु के प्रति विश्वासघाती रही है।

और यह एक दर्दनाक बात होगी। मुझे लगता है कि व्यभिचार, वेश्यावृत्ति और कामुकता का विचार भी इस्राएल के पापों के लिए एक बहुत ही प्रभावी छवि और चित्र था क्योंकि जब वे कनानी देवताओं की पूजा करते थे तो उनकी मूर्तिपूजा में अक्सर प्रजनन संस्कार शामिल होते थे, जिसमें यौन अनैतिकता और कामुकता शामिल होती थी। ऐसी चीजें जिन्हें परमेश्वर ने कभी भी इस्राएल की पूजा का हिस्सा नहीं बनाया था।

वास्तव में मेरा मानना है कि जब परमेश्वर तम्बू और मंदिर की स्थापना कर रहा था, तो परमेश्वर ने यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए कि ऐसा न हो। यह उनकी पूजा का हिस्सा था, ये यौन प्रजनन संस्कार, यह विकृति, जो खेल में आ गई थी। और इसलिए वेश्यावृत्ति की छवि का उपयोग बहुत प्रभावी ढंग से शाब्दिक रूप से दर्शाता है कि यहूदा हर हरी पहाड़ी पर, इन ऊँचे स्थानों पर क्या कर रहा था, जब वे इन मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा करते थे, तो वे यौन अनैतिकता कर रहे थे।

विवाह रूपक हमें जो पाँचवी बात बताता है, वह यह है कि यह हमें उस न्याय की गंभीरता की याद दिलाता है जो प्रभु इस पाप के परिणामस्वरूप लाने जा रहा है। यिर्मयाह की पुस्तक में परमेश्वर अपने लोगों के पाप से क्रोधित होता है। और अध्याय 23, श्लोक 20 में, परमेश्वर का क्रोध तब तक कम नहीं होगा जब तक कि वह अपनी सभी इच्छाओं को पूरा नहीं कर लेता।

यिर्मयाह 13:22, प्रभु का भयंकर क्रोध लोगों के विरुद्ध फूटने वाला है। और यिर्मयाह कहता है, मैं परमेश्वर के क्रोध और क्रोध से भरा हुआ हूँ क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों के पाप से क्रोधित है, और जब हम पाप की गंभीरता को समझते हैं तो उसकी प्रतिक्रिया उचित है। परमेश्वर की प्रतिक्रिया, परमेश्वर का टूटा हुआ हृदय, परमेश्वर का क्रोध, और फिर वह विशिष्ट तरीके जिनसे वह लोगों का न्याय करने जा रहा है, वे उनके द्वारा किए गए कार्यों और उनके द्वारा किए गए पाप के प्रकाश में पूरी तरह से उचित हैं।

इस संदेश को सुनने वाला हर पति इसे समझ जाएगा। पुराने नियम में, पुराने नियम के कानून में, और प्राचीन निकट पूर्वी कानून में, व्यभिचार अक्सर एक मृत्युदंड अपराध था। इसके लिए दोषी पाए जाने वाले को मौत की सज़ा दी जा सकती थी।

यह एक मृत्युदंडनीय अपराध था। दूसरी ओर, ऐसे समय भी थे जब पति वास्तव में पत्नी को किसी प्रकार के शारीरिक दंड से दंडित कर सकता था। इसराइल की एक बेवफा पत्नी और भगवान के एक क्रोधित पति के रूप में यह रूपक और छवि जिसे धोखा दिया गया है और जिसके परिणामस्वरूप भगवान गुस्से में प्रतिक्रिया करते हैं, केवल पुस्तक की शुरुआत में ही नहीं है।

यह पूरी किताब में अपने आप काम करेगा। और हम अध्याय 13 पर आते हैं। हम श्लोक 24 से 27 को देखते हैं।

और यह यिर्मयाह की पुस्तक में सबसे अधिक परेशान करने वाले अंशों में से एक है। ईमानदारी से कहें तो, हमारी संस्कृति और हमारे संदर्भ में, इन आयतों को पढ़ना भी असहज है। लेकिन यहाँ प्रभु क्या कहते हैं।

पद 24: मैं तुम्हें जंगल में हवा से उड़ाई गई भूसी की तरह तितर-बितर कर दूँगा। तुम्हारा भाग यही है। यहोवा की यह वाणी है कि जो भाग मैंने तुम्हारे लिए निर्धारित किया है, वह इसलिए है क्योंकि तुम मुझे भूल गए हो और झूठ पर भरोसा करते हो।

याद रखें, इस मामले में प्रभु एक विश्वासघाती पति है। और वह पद 26 में कहता है, मैं स्वयं तेरे वस्त्र को तेरे चेहरे पर उठाऊँगा, और तेरी लज्जा प्रकट होगी। मैंने तेरे घिनौने काम, तेरे व्यभिचार, तेरे नाम, पहाड़ों और मैदानों पर तेरे व्यभिचार देखे हैं।

हे पुराने यरूशलेम, हाय रे! तुम्हें शुद्ध होने में कितना समय लगेगा? और इसलिए, प्राचीन निकट पूर्व की संस्कृति में, परमेश्वर उनके व्यभिचार को बहुत ही उचित तरीके से दंडित कर रहा है। वह उन्हें सार्वजनिक स्थान पर ले जा रहा है।

वह अपनी पत्नी को नंगा कर रहा है, और वह उसे इस तरह से नंगा कर रहा है कि सभी उसकी शर्म को देख सकें। और फिर, ईमानदारी से कहूँ तो, जैसा कि मैंने इसे हमारी संस्कृति और हमारे संदर्भ में पढ़ा है, इसे पढ़ना दर्दनाक है। एक पादरी के रूप में, और यहाँ इस सत्र को पढ़ाने के दौरान भी, मुझे इस बात के प्रति संवेदनशील होना चाहिए कि हम अपनी संस्कृति में मौजूद पति-पत्नी के दुर्व्यवहार की समस्या के प्रकाश में इसे कैसे दर्शाते हैं।

जैसा कि नारीवादी आलोचकों ने बाइबिल के इस भाग को पढ़ा है, वे अक्सर इससे गहराई से परेशान हुए हैं, और फिर, जाहिर तौर पर ऐसा है। ऐसे अध्ययन हैं जो विशेष रूप से यिर्मयाह 2, यिर्मयाह 13, यहजकेल 16, यहजकेल 23, और नहूम की पुस्तक जैसे अंशों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जहाँ नीनवे शहर को एक महिला के रूप में वर्णित किया गया है जिसे प्रभु नग्न करने और दंडित करने जा रहे हैं। और उन्होंने इसे अश्लील-भविष्यवाणी भाषा, वहाँ मौजूद कल्पना के रूप में संदर्भित किया है।

ऐसे अध्ययन हुए हैं जिनमें ईश्वर को दैवीय बलात्कारी करार दिया गया है। वह एक यौन शिकारी है। वह एक अपमानजनक पति है।

और जैसा कि मैंने कहा, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार की समस्या और हमारे समाज में यह एक मुद्दा है, इस पर प्रकाश डालते हुए, मुझे लगता है कि हमें सावधान रहना चाहिए कि हम इसे कैसे सिखाते हैं और पुराने नियम से भगवान के बारे में इस विचार को कैसे व्यक्त करते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि भविष्यवक्ता प्राचीन निकट पूर्वी संस्कृति में, प्राचीन निकट पूर्वी संदर्भ में बोल रहे हैं। बाइबल के कुछ पहलू ऐसे हैं जो समय-आधारित हैं।

फिर से, यह स्वर्ग से नहीं गिरता है। और यह उस समय की संस्कृति को दर्शाता है जहाँ एक महिला को शारीरिक रूप से दंडित किया जाता था, यहाँ तक कि कभी-कभी मृत्युदंड भी दिया जाता था। इसलिए, हम इसे समझते हैं।

लेकिन साथ ही, मैं यह भी चाहता हूँ कि हम यह समझें कि हम रूपक भाषा से निपट रहे हैं। और मुझे लगता है कि कभी-कभी इन अंशों पर नारीवादी आलोचकों की प्रतिक्रियाओं और प्रतिक्रियाओं में, मुझे लगता है कि कभी-कभी वे उस विचार को कम कर देते हैं। यह कल्पना निश्चित रूप से हमारे लिए परेशान करने वाली है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि बाइबल को भुनाना यहाँ हमारा काम है।

मेरा मानना है कि यहां हमारा काम यह सुनना है कि वह रूपक क्या कहना चाहता है। भगवान को एक ऐसे पति के रूप में चित्रित करने के इस संदर्भ में जो अपनी पत्नी को दंडित करने जा रहा है, हमें उस उद्देश्य की याद आती है कि यिर्मयाह इसे पहले स्थान पर क्यों व्यक्त कर रहा है। परमेश्वर लोगों को ये बातें इसलिए बता रहा है ताकि वे पश्चाताप करें और अपने तरीके बदल लें।

और हाँ, बाइबल इसे व्यक्त करने के लिए कुछ बहुत ही ग्राफिक, भयानक, हिंसक कल्पना का उपयोग करती है। लेकिन आखिरकार, परमेश्वर का उद्देश्य इस प्रकार की सज़ा देना नहीं था। इस भाषा का उद्देश्य आशापूर्वक यहूदा को उनके पापों से दूर करना था ताकि वे इससे बच सकें।

वास्तविक अर्थ में, मुझे लगता है कि भविष्यवक्ता भी यथार्थवादी हैं, क्योंकि वे महिलाओं के उपचार से संबंधित इस कल्पना का उपयोग करते हैं। युद्ध में, चूंकि बेबीलोनवासी भूमि पर आक्रमण करने जा रहे थे, महिलाएं वे होंगी जो अपने बच्चों से वंचित हो जाएंगी। वे वही होंगी जो अपने पतियों को खो देंगी।

वे वही होंगे जिनके साथ बलात्कार और शारीरिक शोषण किया जाएगा। वे अक्सर अपने दुश्मनों से शादी करने के लिए बंदी के रूप में ले जाये जाते थे। और इसलिए, जैसा कि भविष्यवक्ता इस ग्राफिक कल्पना का उपयोग कर रहा है, इन रूपकों को यह कहने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि निर्णय इस तरह दिखने वाला है।

प्रभु को इसमें आनंद नहीं आता। प्रभु को इसमें आनंद नहीं आता। प्रभु इस शक्तिशाली कल्पना का उपयोग लोगों को प्रतिक्रिया देने, अपने पापों से दूर करने और निर्णय को यथासंभव भयानक बनाने के लिए कर रहे हैं ताकि अंततः, वे चेतावनियों का जवाब दे सकें।

इसलिए, मेरा मानना है कि हमें रूपक प्रकृति को समझने की जरूरत है। हमें उन अलंकारिक कारणों पर विचार करने की आवश्यकता है जिनके कारण इसका उपयोग किया जा रहा है। और हमें इसे इस तथ्य के साथ संतुलित करने की आवश्यकता है कि जब हम पुराने नियम के अन्य हिस्सों को देखते हैं, तो हमें याद दिलाया जाता है कि ईश्वर को उत्पीड़ितों और जरूरतमंदों की विशेष चिंता है।

और विशेष रूप से जब उन महिलाओं के बारे में विचार आता है जो उत्पीड़ित हैं या जिनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है या जिनकी देखभाल नहीं की जाती है, तो भगवान उन स्थितियों पर प्रतिक्रिया करते हैं। उत्पत्ति अध्याय 21 में, बस एक सुंदर मार्ग, जो वहां दिखाई गई करुणा को छूता है, प्रभु हाजिरा की पुकार सुनते हैं जब इब्राहीम और सारा ने उसे भगा दिया था। और वह हाजिरा और उसके बेटे इश्माएल के बारे में जानता है।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 10, श्लोक 18 में, हमें याद दिलाया जाता है कि प्रभु अनाथ और विधवा के लिए न्याय करते हैं। और पूरे प्राचीन निकट पूर्व में, यह एक आदर्श था। एक न्यायप्रिय राजा गरीबों और जरूरतमंदों का ख्याल रखता है।

और यदि प्रभु एक न्यायी राजा है, तो वह ऐसा करेगा। व्यवस्थाविवरण अध्याय 20, श्लोक 15 से 18, हमें याद दिलाते हैं कि युद्ध के सामान्य अभ्यास में, इज़राइल को गैर-लड़ाकों के खिलाफ हिंसक कार्य नहीं करना था। और इसमें महिलाएं भी शामिल होंगी।

और फिर अंत में, व्यवस्थाविवरण 21 छंद 14 से 18 में, जिसे किसी ने संदर्भित किया है कि इज़राइल को क्या करना है जब वे युद्ध के वास्तव में गर्म कैदियों को लेते हैं, इज़राइल को याद दिलाया गया था कि महिलाओं को युद्ध में बंदी बना लिया गया था, भले ही उन्हें बंदी बना लिया गया हो। सम्मान के साथ व्यवहार किया जाए और उन्हें अपने पतियों के शोक मनाने और इस प्रकार की चीजों की अनुमति देने के लिए समय दिया जाए। इसलिए, जो रूपक हम यिर्मयाह की पुस्तक में देखते हैं, वे कभी भी किसी पति द्वारा अपनी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करने या किसी भी प्रकार के शारीरिक तरीके से दुर्व्यवहार करने को प्रमाणित करने, उचित ठहराने, बहाना बनाने या तर्कसंगत ठहराने के लिए डिज़ाइन नहीं किए गए हैं। हमें यह भी याद दिलाया जाता है कि चूंकि भगवान युद्ध के संदर्भ में लोगों का न्याय कर रहे हैं, इसलिए भगवान अपने फैसले को अंजाम देने के लिए इन दुश्मनों का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन मानवीय स्तर पर, ये निर्णय कभी भी पूरी तरह से उचित नहीं होंगे।

एक परम न्याय है जिसे अंततः ईश्वर को ही करना होगा, और ईश्वर बहुत ही अन्यायपूर्ण स्थितियों का उपयोग कर रहा है, और इन महिलाओं का रूपक जो दुर्व्यवहार और चोट और घायल होने जा रही हैं और जो कुछ भी उनके साथ होने जा रहा है, वह उस न्याय की वास्तविकता और भयावहता को व्यक्त करता है। ईश्वरीय क्रोध एक कठिन चीज है। इसलिए, हमारी संस्कृति में, यिर्मयाह की पुस्तक का यह एक कठिन हिस्सा है, और मुझे लगा कि यह महत्वपूर्ण है कि हम इसे संबोधित करें।

लेकिन इसके अलावा, मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति में एक और भी महत्वपूर्ण मुद्दा है जिसके बारे में हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि हमारे प्रतिरोध का हिस्सा सिर्फ एक पत्नी के साथ पति-पत्नी द्वारा दुर्व्यवहार के विचार के प्रति नहीं है, बल्कि मुझे लगता है कि इन छवियों के हमें परेशान करने का एक कारण यह है कि, कुल मिलाकर, हम एक पवित्र ईश्वर के विचार के प्रति प्रतिरोधी हैं जो पाप से घृणा करता है। और तथ्य यह है कि हमारे पाप और हमारी अवज्ञा और हमारी बेवफाई और हमारी मूर्तिपूजा, और याद रखें केल्विन ने कहा था कि हमारे दिल मूर्ति के कारखाने हैं, हम सभी मूर्ति पूजक हैं, और यह हमें भगवान के क्रोध और भगवान के फैसले के अधीन लाता है।

मैं इस सप्ताह एक बहुत लोकप्रिय ईसाई ब्लॉग पढ़ रहा था, और ब्लॉग पर टिप्पणियाँ किसी भी प्रकार के विचार की अपमानजनकता पर चर्चा कर रही थीं या धर्मशास्त्रियों के लिए यह कहना कितना अपमानजनक था कि हम ईश्वर के प्रेम के योग्य नहीं हैं। लेकिन बाइबल हमें याद दिलाती है कि हम ईश्वर के प्रेम के योग्य नहीं हैं, कि ईश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम की सराहना इस कारण नहीं की कि हम किस लायक हैं, बल्कि अपनी दया और अनुग्रह के कारण किया। और जब हम एक पवित्र ईश्वर के क्रोध और इस तथ्य को समझते हैं कि ईश्वर, अपने क्रोध में, इन चीजों को घटित होने देगा, तो वह इस्राएल के लोगों पर इस प्रकार का अपमान लाने के लिए बेबीलोनियों का उपयोग करेगा।

जब हम दैवीय क्रोध की तीव्रता को समझते हैं, तब हम भगवान के प्रेम और भगवान की दया और भगवान की करुणा की महानता को समझना शुरू कर सकते हैं। हम परमेश्वर का क्रोध और क्रोध दूर करके उसे प्रेम का महान परमेश्वर नहीं बनाते हैं। एक तरह से, मुझे लगता है कि हम उसके प्यार को कमजोर करते हैं।

अब, अंत में, आखिरी चीज जो मुझे लगता है कि हमें विवाह के रूपक से याद आती है, और हमने यहां कुछ बहुत ही नकारात्मक चीजों को देखा है, लेकिन जैसे ही हम समापन पर आते हैं, भविष्यवक्ताओं में विवाह का रूपक हमें याद दिलाता है। अपने लोगों के प्रति ईश्वर का स्थायी प्रेम और प्रतिबद्धता। जब आप पाप के लिए ईश्वर के क्रोध और घृणा को देखते हैं, तो आप उस स्थान पर भी आ सकते हैं जहाँ आप वास्तव में उनकी दया और अनुग्रह की सराहना करते हैं। और वही परमेश्वर जो उसकी पथभ्रष्ट पत्नी को दण्ड देने वाला है, वही परमेश्वर अंततः उसे पुनर्स्थापित भी करेगा।

स्मरण रखो, परमेश्वर कहता है, मैं ने तुम से अनन्त प्रेम रखा है। आपके प्रति मेरा प्यार और मेरी प्रतिबद्धता हमेशा के लिए है। और उसके आधार पर, परमेश्वर इस्राएल को नहीं छोड़ सकता।

भगवान उससे प्यार करना बंद नहीं कर सकते. यदि ईश्वर का प्रेम शाश्वत प्रेम है, तो ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें प्रेरित कर सके या ऐसा कुछ भी नहीं है जो ईश्वर को हमसे और अधिक प्रेम करने के लिए प्रेरित कर सके। ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके कारण ईश्वर हमसे कम प्रेम करे।

तो, होशे की पुस्तक में यह स्थायी प्रतिबद्धता है, याद रखें, जो परमेश्वर द्वारा अपनी बेवफा पत्नी को सजा देने के बारे में एक पुस्तक है। होशे के अध्याय 11, श्लोक 8 और 9 में प्रभु कहते हैं, हे

एप्रैम, मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकता हूँ? यह ऐसा है जैसे मुझे तुम्हारे विरुद्ध अपना न्याय, अपना क्रोध और अपना प्रकोप पूरा करना है। मुझे यह न्याय निष्पादित करना है।

मेरे चरित्र का न्याय पक्ष यही मांग करता है। लेकिन मैं तुमसे प्यार भी करता हूँ। मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकता हूँ? और फिर वह श्लोक 9 में कहता है, इस कारण से, मैं तुम्हारे विरुद्ध अपने क्रोध का पूरा प्रकोप नहीं दिखाऊँगा।

मैं तुम्हें पूरी तरह खत्म या नष्ट नहीं करने जा रहा हूँ। और हमें इस जगह पर ले जाया जाता है जहाँ हम सवाल पूछते हैं, क्यों? सैकड़ों-सैकड़ों वर्षों की बेवफाई के आलोक में ईश्वर अपने लोगों से इतना प्रेम कैसे कर सकता है? कई बार जोड़े शादी के लिए पादरी के रूप में मेरे पास आए हैं। और अगर मैं उनसे सीधे तौर पर न पूछूँ तो मैं अपने मन में पूछूँगा कि किस वजह से आप इस व्यक्ति से शादी करना चाहते हैं? खैर, हम निश्चित रूप से इज़राइल में ईश्वर के बारे में या चर्च में ईसा मसीह के बारे में पूछ सकते हैं।

लेकिन प्रभु कहते हैं कि मेरी अपने लोगों के प्रति स्थायी प्रतिबद्धता है। और इसलिए, पुराने नियम में, ईश्वर द्वारा अपनी पत्नी को तलाक देने की वास्तविकता है। यिर्मयाह अध्याय 3, मैं उसे तलाक का प्रमाण पत्र देने जा रहा हूँ।

वह मैं पहले ही लिख चुका हूँ। मैं इसे पहले ही इस्राएल के लोगों को दे चुका हूँ। यहूदा के साथ भी यही होने वाला है।

लेकिन यह भी वादा किया गया है कि तलाक केवल अस्थायी है। रिश्ते को तोड़ने की एक समय सीमा होती है। और इसलिए, जब हम भविष्यवक्ता यशायाह के पास आते हैं, तो भविष्यवक्ता यशायाह कहता है, तलाक का वह प्रमाण पत्र कहाँ है जो मैंने तुम्हारी माँ के खिलाफ दिया था? यह अब वहाँ नहीं है क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को वापस लेने जा रहा है।

यशायाह 54 में, वह बाँझ स्त्री जो अकेली विधवा और निःसंतान है, वह फिर से परमेश्वर की पवित्र दुल्हन बनने जा रही है। और उसके इतने बच्चे होंगे कि यरूशलेम शहर उसे अपने अंदर समा नहीं पाएगा। यशायाह 62 में, इस्राएल को एक नया नाम दिया गया है क्योंकि परमेश्वर उसे अपनी दुल्हन के रूप में लेने जा रहा है।

होशे के साथ उसका रिश्ता, जब वह जाता है और अपनी पत्नी को वापस ले आता है, यह दर्शाता है कि परमेश्वर आखिरकार इस्राएल को कैसे बहाल करने जा रहा है। और मैं इस पाठ को यिर्मयाह अध्याय 31, पद 22 की एक आयत के साथ समाप्त करना चाहता हूँ। याद रखें, पुस्तक का कथानक यह है कि यह केवल एक बेवफा पत्नी के बारे में नहीं है।

यह सिर्फ़ टूटी हुई शादी के बारे में नहीं है। यह परमेश्वर द्वारा उस रिश्ते को बहाल करने के बारे में है। और अध्याय 31, श्लोक 22 में यह कहा गया है: प्रभु ने पृथ्वी पर एक नई चीज़ बनाई है।

एक महिला एक पुरुष को घेरती है। इस आयत का क्या मतलब है, इस बारे में कई तरह की चर्चाएँ हुई हैं। आरंभिक चर्च ने इसे यीशु के कुंवारी जन्म के संदर्भ के रूप में व्याख्यायित किया।

मेरा मानना है कि यह इस बारे में बात कर रहा है कि किसी तरह, जब परमेश्वर पुनः निर्माण और पुनर्स्थापना का अपना कार्य करता है, तो स्त्री, इस्राएल, उसे घेर लेगी। वह गले लगाएगी। वह अपने पति को थामे रखेगी।

और जैसे-जैसे परमेश्वर उसे बदलेगा और उसका रूपान्तरण करेगा, वह उसके प्रति पूरी तरह से वफ़ादार होगी। और परमेश्वर और उसके लोगों के बीच का विवाह अंततः वैसा ही होगा जैसा परमेश्वर ने उसे बनाने के लिए डिज़ाइन किया था। यिर्मयाह की पुस्तक में एक कहानी है।

यह कहानी अध्याय 2 में शुरू होती है। यह एक टूटी हुई शादी की कहानी है। लेकिन यिर्मयाह की पूरी किताब इस बारे में है कि परमेश्वर उस शादी को कैसे बहाल करेगा और अपने लोगों को अपने पास वापस लाएगा।

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा यिर्मयाह की किताब पर दिए गए निर्देश हैं। यह सत्र 8 है, यिर्मयाह 2-3, विवाह रूपक, परमेश्वर और इस्राएल।